# अध्याय–चतुर्थ

# प्रदत्तों का विश्लेषण एवं व्याख्या

# अध्याय चतुर्थ

# प्रदत्तों का विश्लेषण एवं व्याख्या

## 4.1.0 भूमिका

प्रस्तुत अध्ययन में विभिन्न उपकरणों द्वारा प्राप्त प्रदत्तों का विश्लेषण करके उनकी व्याख्या करने का प्रयास किया गया है। स्वनिर्मित परिकल्पनाओं की स्वीकृति तथा अस्वीकृति हेतु प्रदत्तों को समूह व उपसमूहों में विभाजित कर विश्लेषण तथा अंतिम परिणाम ज्ञात किया जाता है। जो नवीन सिद्धान्त की खोज अथवा सामान्यीकरण के रूप में होता है। प्रदत्तों के विश्लेषण के अंतर्गत उनकी उपलब्धियों की तुलना अनेक परीक्षण द्वारा कर शोध के उद्देश्यों का निर्णय प्राप्त निष्पत्तियों द्वारा किया जाता है।

## 4.2.0 प्रदत्तों का विश्लेषण एवं व्याख्या

इस अध्याय में भाषा अधिगम (वाचन एवं लेखन) में होने वाली त्रुटियों के आधार पर तथा उचित सांख्यिकीय विधियों का प्रयोग करके विश्लेषण करने का प्रयास किया गया है। प्रस्तुत शोध अध्ययन में कुल नौ परिकल्पनाएँ है रखी गई है तथा इन परिकल्पनाओं की सार्थकता 0.01 स्तर एवं 0.05 स्तर पर देखी गई। इस अध्याय में सर्वप्रथम परिकल्पनाओं के अनुसार विद्यार्थियों की कुल त्रुटियाँ, विद्यार्थियों की संख्या (N) में भाग देकर जो प्रतिफल आया वह उसका मध्यमान (M) निकलकर आया। इस प्रकार क्रमशः मानक विचलन (S.D.), स्वतंत्रता की कोटी (df) टी (t) का मान सार्थक अन्तर इन सभी सांख्यिकीय प्रविधियों का उपयोग किया गया।

सांख्यिकीय प्रविधियों के विश्लेषण के बाद शोधकर्ता द्वारा चयनित त्रुटियों की परिकल्पना के आधार पर, त्रुटियों की व्याख्या की गई। त्रुटियों की व्याख्या करते समय जादातर मात्रात्मक, बिन्दुगत, विरामचिन्हों, नुक्ता, योजक–चिन्ह आदि त्रुटियों पर ज़्यादा ध्यान दिया गया।

विवेचना के संबंध में करलिंगर ने कहा है- "विवेचना के अंतर्गत प्राप्त संबंधो के तर्क संगतिता के आधार पर अनुमान लगाये जाते है तथा अध्ययन से संबंधित सम्बंधो के प्रति निष्कर्ष किये जाते है।

4.2.1 परिकल्पना क्रमांक-1

**आदिवासी एवं गैर-आदिवासी विद्यार्थियों के हिन्दी भाषा-अधिगम में होने वाली त्रुटियों में सार्थक अन्तर नहीं है।**

आदिवासी एवं गैर-आदिवासी विद्यार्थियों की कुल त्रुटियाँ तालिका क्रं.1 में दिखाई गई है।

तालिका क्रमांक 1

आदिवासी एवं गैर-आदिवासी विद्यार्थियों की कुल त्रुटियाँ

| अ.क्र. | वर्गवारी | वाचन | लेखन | योग | मध्यमान |
|---|---|---|---|---|---|
| 1. | आदिवासी विद्यार्थी | 378 | 1186 | 1564 | 31.28 |
| 2. | गैर-आदिवासी विद्यार्थी | 310 | 958 | 1268 | 25.36 |

व्याख्या

तालिका क्रमांक-1 से स्पष्ट है कि आदिवासी विद्यार्थियों की हिन्दी भाषा अधिगम में होने वाली कुल त्रुटियाँ 1564 है। जिसका मध्यमान 31.28 है। जिसमें वाचन की 378 त्रुटियाँ तथा लेखन की 1186 त्रुटियाँ है। जहां तक गैर-आदिवासी विद्यार्थियों की कुल त्रुटियों की बात है, तो उनकी कुल त्रुटियाँ 1268 है, जिसका मध्यमान 25.36 है, जिसमें वाचन की 310 त्रुटियाँ तथा लेखन की 958 त्रुटियाँ है। आदिवासी विद्यार्थियों की गैर-आदिवासी विद्यार्थियों की अपेक्षा 296 त्रुटियाँ अधिक है।

निम्नलिखित तालिका में आदिवासी तथा गैर-आदिवासी विद्यार्थियों के बीच हिन्दी भाषा अधिगम में होने वाली त्रुटियों की तुलना की गई है।

तालिका क्रमांक 2

| अ. क्र. | वर्गवारी | विद्यार्थी (N) | मध्यमान (M) | मानक विचलन (S.D.) | स्वतंत्रता की कोटी (df) | टी का मान (t) | सार्थकता (0.05) |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 1. | आदिवासी विद्यार्थी | 50 | 31.28 | 12.34 | 98 | 2.69 | है |
| 2. | गैर-आदिवासी विद्यार्थी | 50 | 25.36 | 9.56 | | | |

0.05 - 1.98
0.01 - 2.63

व्याख्या

तालिका क्र.2 से स्पष्ट होता है कि आदिवासी विद्यार्थियों की कुल संख्या 50 है तथा मध्यमान (M) 31.28, मानक विचलन (S.D.) 12.34 है। गैर-आदिवासी विद्यार्थियों की संख्या 50 है तथा मध्यमान (M) 25.36, मानक विचलन (S.D.) 9.56 है। दोनों की स्वतंत्रता कोटी (df) 98, तालिका में 'टी' का मान 2.69 है जो कि 98 df के टी मूल्य 0.05 सार्थकता स्तर (1.98) से अधिक है। इसलिए आदिवासी विद्यार्थी एवं गैर-आदिवासी विद्यार्थियों के हिन्दी भाषा अधिगम में होने वाली त्रुटियों में सार्थक अन्तर है। अतः परिकल्पना अस्वीकार की जाती है।

4.2.2 परिकल्पना क्र.-2

**आदिवासी एवं गैर-आदिवासी बालकों के हिन्दी भाषा अधिगम में होने वाली त्रुटियों में सार्थक अन्तर नहीं है।**

आदिवासी एवं गैर-आदिवासी बालकों की कुल त्रुटियाँ तालिका क्रं. 3 में दर्शायी गई है।

तालिका क्रमांक 3

आदिवासी एवं गैर-आदिवासी बालकों की कुल त्रुटियाँ

| अ.क्र. | वर्गवारी | वाचन | लेखन | योग | मध्यमान |
|---|---|---|---|---|---|
| 1. | आदिवासी बालक | 203 | 640 | 843 | 33.72 |
| 2. | गैर-आदिवासी बालक | 163 | 553 | 716 | 28.64 |

व्याख्या

तालिका क्र. 3 से स्पष्ट है कि आदिवासी बालकों की हिन्दी भाषा अधिगम में होने वाली कुल त्रुटियाँ 843 है, जिसका मध्यमान 33.72 है। जिसके अंतर्गत वाचन की 203 त्रुटियाँ तथा लेखन की 640 त्रुटियाँ है। गैर-आदिवासी बालकों की कुल त्रुटियाँ 716 है जिसका मध्यमान 28.64 है। जिसके अन्तर्गत वाचन की 163 त्रुटियाँ तथा लेखन की 553 त्रुटियाँ है। आदिवासी बालकों की गैर-आदिवासी बालकों की अपेक्षा 127 त्रुटियाँ अधिक है।

निम्नलिखित तालिका में आदिवासी तथा गैर-आदिवासी बालकों के बीच हिन्दी भाषा अधिगम में होने वाली त्रुटियों की तुलना की गई है।

तालिका क्रमांक 4

| अ. क्र. | वर्गवारी | विद्यार्थी (N) | मध्यमान (M) | मानक विचलन (S.D.) | स्वतंत्रता की कोटी (df) | टी का मान (t) | सार्थकता (0.05) |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 1. | आदिवासी बालक | 25 | 33.72 | 12.63 | 48 | 1.56 | नहीं है |
| 2. | गैर-आदिवासी बालक | 25 | 28.64 | 10.21 | | | |

0.05 - 2.01
0.01 - 2.68

व्याख्या

तालिका क्र. 4 से स्पष्ट होता है कि आदिवासी बालकों की कुल संख्या 25 है तथा मध्यमान (M) 33.72, मानक विचलन (S.D.) 12.63 है। गैर-आदिवासी बालकों की संख्या 25 है तथा मध्यमान 28.64, मानक विचलन (S.D.) 10.21 है। दोनो की स्वतंत्रता की कोटी (df) 48, तालिका में 'टी' का मान 1.56 है जो कि 48 df के टी मूल्य 0.05 सार्थकता स्तर (2.01) ये कम है। इसलिए आदिवासी बालक एवं गैर-आदिवासी बालकों के हिन्दी भाषा अधिगम में होने वाली त्रुटियों में सार्थक अन्तर नहीं है। अतः परिकल्पना स्वीकार की जाती है।

### 4.2.3 परिकल्पना क्र.-3

**आदिवासी एवं गैर-आदिवासी बालिकाओं के हिन्दी भाषा अधिगम में होने वाली त्रुटियों में सार्थक अन्तर नहीं है।**

आदिवासी एवं गैर-आदिवासी बालिकाओं की कुल त्रुटियाँ तालिका क्र.5 में है दिखाई गई है।

तालिका क्रमांक 5

आदिवासी एवं गैर-आदिवासी बालिकाओं की कुल त्रुटियाँ

| अ.क्र. | वर्गवारी | वाचन | लेखन | योग | मध्यमान |
|---|---|---|---|---|---|
| 1. | आदिवासी बालिकाएँ | 175 | 546 | 721 | 28.84 |
| 2. | गैर-आदिवासी बालिकाएँ | 147 | 405 | 552 | 22.08 |

व्याख्या

तालिका क्र. 5 से स्पष्ट है कि आदिवासी बालिकाओं की हिन्दी भाषा अधिगम में होने वाली कुल त्रुटियाँ 721 है, जिसका मध्यमान 28.84 है। जिसमें वाचन की 175 त्रुटियाँ तथा लेखन की 546 त्रुटियाँ है। गैर-आदिवासी बालिकाओं की कुल त्रुटियाँ 552 है, जिसका मध्यमान 22.08 है। जिसमें वाचन की 147 त्रुटियाँ तथा लेखन की 405 त्रुटियाँ है।

आदिवासी बालिकाओं की गैर–आदिवासी बालिकाओं की अपेक्षा 169 अधिक है।

निम्नलिखित तालिका में आदिवासी तथा गैर–आदिवासी बालिकाओं के बीच हिन्दी भाषा अधिगम में होने वाली त्रुटियों की तुलना की गई है।

तालिका क्रमांक 6

| अ. क्र. | वर्गवारी | विद्यार्थी (N) | मध्यमान (M) | मानक विचलन (S.D.) | स्वतंत्रता की कोटी (df) | टी का मान (t) | सार्थकता (0.05) |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 1. | आदिवासी विद्यार्थी | 25 | 28.84 | 12.06 | 48 | 2.33 | है |
| 2. | गैर–आदिवासी विद्यार्थी | 25 | 22.08 | 07.98 | | | |

0.05 – 2.01
0.01 – 2.68

व्याख्या

तालिका क्र.6 से स्पष्ट होता है कि आदिवासी बालिकाओं की संख्या (N) 25 है, तथा मध्यमान (M) 28.84, मानक विचलन (S.D.) 12.06 है। गैर–आदिवासी बालिकाओं की संख्या (N) 25 है, तथा मध्यमान (M) 22.08, मानक विचलन (S.D.) 07.98 है। दोनों की स्वतंत्रता की कोटी (df) 48, तालिका में 'टी' का मान (t) 2.33 है जो कि 48 (df) के टी मूल्य 0.05 सार्थकता स्तर (2.01) से अधिक है। इसलिए आदिवासी एवं गैर–आदिवासी बालिकाओं के हिन्दी भाषा अधिगम में होने वाली त्रुटियों में सार्थक अन्तर है। अतः परिकल्पना को अस्वीकार किया जाता है।

4.2.4 परिकल्पना क्र. 4

**आदिवासी एवं गैर-आदिवासी विद्यार्थियों के वाचन में होने वाली त्रुटियों में सार्थक अन्तर नहीं है।**

आदिवासी एवं गैर-आदिवासी विद्यार्थियों की वाचन की त्रुटियाँ तालिका क्र.7 में दिखायी गई है।

तालिका क्रमांक 7

आदिवासी एवं गैर-आदिवासी विद्यार्थियों की वाचन में की गई त्रुटियाँ

| अ.क्र. | वर्गवारी | वाचन | मध्यमान |
|---|---|---|---|
| 1. | आदिवासी विद्यार्थी | 378 | 7.56 |
| 2. | गैर-आदिवासी विद्यार्थी | 310 | 6.20 |

व्याख्या

तालिका क्र.-7 से स्पष्ट है कि आदिवासी विद्यार्थियों की वाचन में होने वाली त्रुटियाँ 378 है, जिसका मध्यमान 7.56 है। गैर-आदिवासी विद्यार्थियों की वाचन में होने वाली त्रुटियाँ 310 है, जिसका मध्यमान 6.20 है। आदिवासी विद्यार्थियों की गैर-आदिवासी विद्यार्थियों की अपेक्षा 68 त्रुटियाँ अधिक है।

निम्नलिखित तालिका में आदिवासी एवं गैर-आदिवासी विद्यार्थियों के बीच वाचन में होने वाली त्रुटियों की तुलना की गई है।

तालिका क्रमांक 8

| अ. क्र. | वर्गवारी | विद्यार्थी (N) | मध्यमान (M) | मानक विचलन (S.D.) | स्वतंत्रता की कोटी (df) | टी का मान (t) | सार्थकता (0.05) |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 1. | आदिवासी विद्यार्थी | 50 | 7.56 | 3.00 | 98 | 3.77 | है |
| 2. | गैर-आदिवासी विद्यार्थी | 50 | 6.20 | 2.25 | | | |

0.05 - 1.98

0.01 - 2.63

व्याख्या

तालिका क्र. 8 से स्पष्ट है कि आदिवासी विद्यार्थियों की संख्या 50 है तथा मध्यमान (M) 7.56, मानक विचलन (S.D.) 3.00 है। गैर-आदिवासी विद्यार्थियों की संख्या 50 है तथा मध्यमान (M) 6.20 है, मानक विचलन (S.D) 2.25 है। दोनों की स्वतंत्रता की कोटी (df) 98 तालिका में 'टी' का मान (t) 3.77 है जो कि 98 df के टी मूल्य 0.05 सार्थकता स्तर (1.98) से अधिक है। इसलिए आदिवासी एवं गैर-आदिवासी विद्यार्थियों के वाचन में होने वाली त्रुटियों में सार्थक अन्तर है। अतः परिकल्पना को अस्वीकार किया जाता है।

इससे यह स्पष्ट होता है कि आदिवासी विद्यार्थी गैर-आदिवासी विद्यार्थियों की अपेक्षा वाचन में पिछड़े है या कमजोर है। इन्हें समकक्ष लाने हेतु उचित प्रयास करने की आवश्यकता है।

### 4.2.5 परिकल्पना क्र.-5

**आदिवासी एवं गैर-आदिवासी विद्यार्थियों के लेखन में होने वाली त्रुटियों में सार्थक अन्तर नहीं है।**

आदिवासी एवं गैर-आदिवासी विद्यार्थियों की लेखन त्रुटियाँ तालिका क्र. 9 में दिखाई गई है।

तालिका क्रमांक 9

आदिवासी एवं गैर-आदिवासी विद्यार्थियों की लेखन त्रुटियाँ

| अ.क्र. | वर्गवारी | वाचन | मध्यमान |
|---|---|---|---|
| 1. | आदिवासी विद्यार्थी | 1186 | 23.72 |
| 2. | गैर-आदिवासी विद्यार्थी | 958 | 19.16 |

व्याख्या

तालिका क्र. 9 से स्पष्ट है कि आदिवासी विद्यार्थियों की लेखन में होने वाली त्रुटियाँ 1186 है, जिसका मध्यमान 23.72 है। गैर-आदिवासी विद्यार्थियों की लेखन में होने वाली त्रुटियाँ 958 है, जिसका मध्यमान 19.

16 है आदिवासी विद्यार्थियों की गैर-आदिवासी विद्यार्थियों की अपेक्षा 228 लेखन त्रुटियाँ अधिक है। लेखन की त्रुटियों में अन्तर को देखते हुए यह कहा जा सकता हैं कि यह अन्तर काफी ज्यादा है।

निम्नलिखित तालिका में आदिवासी एवं गैर-आदिवासी विद्यार्थियों की लेखन में होने वाली त्रुटियों की तुलना की गई है।

तालिका क्रमांक 8

| अ. क्र. | वर्गवारी | विद्यार्थी (N) | मध्यमान (M) | मानक विचलन (S.D.) | स्वतंत्रता की कोटी (df) | टी का मान (t) | सार्थकता (0.05) |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 1. | आदिवासी बालक | 50 | 23.72 | 9.41 | 98 | 2.59 | है |
| 2. | गैर-आदिवासी बालक | 50 | 19.16 | 8.15 | | | |

0.05 - 1.98
0.01 - 2.63

व्याख्या

तालिका क्र. 10 से स्पष्ट है कि आदिवासी विद्यार्थियों की कुल संख्या 50 है जिसमें 25 बालक एवं 25 बालिकाओं का समावेश है तथा मध्यमान (M) 23.72, मानक विचलन (S.D.) 9.41 है। गैर-आदिवासी विद्यार्थियों की कुल संख्या 50 है जिसमें 25 बालक एवं 25 बालिकाओं का समावेश है तथा मध्यमान (M) 19.16, मानक विचलन (S.D.) 8.15 है। दोनों की स्वतंत्रता की कोटी (df) 98 तालिका में 'टी' का मान 2.59 है जो कि 98 df के टी मूल्य 0.05 सार्थकता स्तर (1.98) से अधिक है। इसलिए आदिवासी विद्यार्थी एवं गैर-आदिवासी विद्यार्थियों के लेखन में होने वाली त्रुटियों में सार्थक अन्तर है। अतः परिकल्पना को अस्वीकार किया जाता है।

इससे यह स्पष्ट होता है कि आदिवासी विद्यार्थी गैर-आदिवासी विद्यार्थियों की अपेक्षा में काफी पिछडे है। हालांकि त्रुटियाँ दोनों वर्गो के विद्यार्थियों ने की है परन्तु अंतर को देखने पर यह ज्ञात होता है कि आदिवासी विद्यार्थी लेखन में कमजोर है।

4.2.6 परिकल्पना क्र. 6

**आदिवासी एवं गैर-आदिवासी बालकों के वाचन में होने वाली त्रुटियों में सार्थक अन्तर नहीं है।**

आदिवासी एवं गैर-आदिवासी बालकों की वाचन की त्रुटियाँ तालिका क्र.11 में दिखाई गई है।

तालिका क्रमांक 11

आदिवासी एवं गैर-आदिवासी बालकों की वाचन की त्रुटियाँ

| अ.क्र. | वर्गवारी | वाचन | मध्यमान |
|---|---|---|---|
| 1. | आदिवासी बालक | 203 | 8.12 |
| 2. | गैर-आदिवासी बालक | 163 | 6.52 |

व्याख्या

तालिका क्र.11 से स्पष्ट होता है कि आदिवासी बालकों की वाचन की 203 त्रुटियाँ है, जिसका मध्यमान 8.12 है। गैर-आदिवासी बालकों की वाचन की त्रुटियाँ 163 है, जिसका मध्यमान 6.52 है। आदिवासी बालकों की गैर-आदिवासी बालकों की अपेक्षा 40 वाचन त्रुटियाँ अधिक है।

निम्नलिखित तालिका में आदिवासी एवं गैर-आदिवासी बालकों की वाचन की त्रुटियों की तुलना की गई है।

तालिका क्रमांक 12

| अ. क्र. | वर्गवारी | विद्यार्थी (N) | मध्यमान (M) | मानक विचलन (S.D.) | स्वतंत्रता की कोटी (df) | टी का मान (t) | सार्थकता (0.05) |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 1. | आदिवासी बालक | 25 | 8.12 | 3.03 | 48 | 2.07 | है |
| 2. | गैर-आदिवासी बालक | 25 | 6.52 | 2.42 | | | |

0.05 - 2.01
0.01 - 2.68

व्याख्या

तालिका क्र.12 से स्पष्ट होता है कि आदिवासी बालकों की संख्या 25 है तथा मध्यमान (M) 8.12, मानक विचलन (S.D.) 3.03 है। गैर-आदिवासी बालकों की संख्या 25 है तथा मध्यमान (M) 6.52, मानक विचलन (S.D.) 2.42 है। दोनों की स्वतंत्रता की कोटी (df)48 तालिका में 'टी' का मान 2.07 है जो कि 48 df के टी मूल्य 0.05 सार्थकता स्तर (2.01) से अधिक है। इसलिए आदिवासी एवं गैर-आदिवासी बालकों के वाचन में होने वाली त्रुटियो में सार्थक अन्तर है। अतः परिकल्पना अस्वीकार की जाती है।

इससे यह ज्ञात होता है कि आदिवासी बालक गैर-आदिवासी बालकों की अपेक्षा वाचन में कमजोर है या उन्हें वाचन करते समय कठिनाई होती है।

### 4.2.7 परिकल्पना क्र.7

**आदिवासी बालिका एवं गैर-आदिवासी बालिकाओं के वाचन में होने वाली त्रुटियों में सार्थक अन्तर नहीं है।**

आदिवासी बालिका एवं गैर-आदिवासी बालिकाओं की वाचन की त्रुटियाँ तालिका क्र. 13 में दिखाई गई है।

तालिका क्रमांक 13

आदिवासी बालिका एवं गैर-आदिवासी बालिकाओं की वाचन की त्रुटियाँ

| अ.क्र. | वर्गवारी | वाचन | मध्यमान |
|---|---|---|---|
| 1. | आदिवासी बालिका | 175 | 7 |
| 2. | गैर-आदिवासी बालिका | 147 | 5.86 |

व्याख्या

तालिका क्र. 13 से स्पष्ट होता है कि आदिवासी बालिकाओं की वाचन की त्रुटियाँ 175 है, जिसका मध्यमान 7 है। गैर-आदिवासी बालिकाओं

की वाचन की त्रुटियाँ 147 है। जिसका मध्यमान 5.88 है। आदिवासी बालिकाओं की गैर-आदिवासी बालिकाओं की अपेक्षा 28 वाचन त्रुटियाँ अधिक है।

निम्नलिखित तालिका में आदिवासी एवं गैर-आदिवासी बालिकाओं की वाचन की त्रुटियोँ की तुलना की गई है।

तालिका क्रमांक 14

| अ. क्र. | वर्गवारी | विद्यार्थी (N) | मध्यमान (M) | मानक विचलन (S.D.) | स्वतंत्रता की कोटी (df) | टी का मान (t) | सार्थकता (0.05) |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 1. | आदिवासी बालिका | 25 | 7 | 2.99 | 48 | 1.53 | नहीं है |
| 2. | गैर-आदिवासी बालिका | 25 | 5.88 | 2.13 | | | |

0.05 - 2.01
0.01 - 2.68

व्याख्या

तालिका क्र. 14 से स्पष्ट होता है कि आदिवासी बालिकाओं की संख्या (M) 25 है तथा मध्यमान (M) 7 है, मानक विचलन (S.D.) 2. 99 है। गैर-आदिवासी बालिकाओं की संख्या (N) 25 है तथा मध्यमान (M) 5.88 मानक विचलन (S.D.) 2.13 है। दोनों की स्वतंत्रता की कोटी (df) 48 तालिका में 'टी' का मूल्य 1.53 है जो कि 48 df के टी मूल्य 0.05 सार्थकता स्तर (0.01) से कम है। इसलिए आदिवासी बालिका एवं गैर-आदिवासी बालिकाओं के वाचन में होने वाली त्रुटियाँ में सार्थक अन्तर नहीं है। अतः परिकल्पना स्वीकार की जाती है।

इससे यह ज्ञान होता है कि त्रुटियों के आधार पर देखें तो आदिवासी बालिकाओं ने गैर-आदिवासी बालिकाओं की अपेक्षा 28 त्रुटियाँ अधिक की है परन्तु विश्लेषण के बाद यह कहा जा सकता है कि यह अन्तर

सार्थक नहीं है अतः उचित प्रयासों द्वारा आदिवासी बालिकाओं की वाचन क्षमता को सफलतापूर्वक सकता है।

### 4.2.8 परिकल्पना क्र.8

**आदिवासी एवं गैर-आदिवासी बालकों के लेखन में होने वाली त्रुटियों में सार्थक अन्तर नहीं है।**

आदिवासी एवं गैर-आदिवासी बालकों के लेखन की त्रुटियाँ तालिका क्र. 15 में दिखाई गई है।

तालिका क्रमांक 15

आदिवासी एवं गैर-आदिवासी बालकों की लेखन की त्रुटियाँ

| अ.क्र. | वर्गवारी | वाचन | मध्यमान |
|---|---|---|---|
| 1. | आदिवासी बालिका | 640 | 25.6 |
| 2. | गैर-आदिवासी बालिका | 553 | 22.12 |

**व्याख्या**

तालिका क्र. 15 से यह स्पष्ट होता है कि आदिवासी बालकों की लेखन की त्रुटियाँ 640 है, जिसका मध्यमान 25.6 है। गैर-आदिवासी बालकों की लेखन की त्रुटियाँ 553 है, जिसका मध्यमान 22.12 है। आदिवासी बालकों की गैर-आदिवासी बालकों की अपेक्षा 87 लेखन त्रुटियाँ अधिक है।

निम्नलिखित तालिका में आदिवासी एवं गैर-आदिवासी बालकों की लेखन की त्रुटियों की तुलना की गई है।

तालिका क्रमांक 16

| अ. क्र. | वर्गवारी | विद्यार्थी (N) | मध्यमान (M) | मानक विचलन (S.D.) | स्वतंत्रता की कोटी (df) | टी का मान (t) | सार्थकता (0.05) |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 1. | आदिवासी बालक | 25 | 25.6 | 9.70 | 48 | 1.33 | नहीं है |
| 2. | गैर-आदिवासी बालक | 25 | 22.12 | 8.78 | | | |

0.05 – 2.01

0.01 – 2.68

व्याख्या

तालिका क्र. 16 से स्पष्ट होता है कि आदिवासी बालकों की संख्या (N) 25 है तथा मध्यमान (M) 25.6, मानक विचलन (S.D.) 9.70 है। गैर-आदिवासी बालकों की संख्या (N) 25 है तथा मध्यमान (M) 22.12, मानक विचलन (S.D.) 8.78 है। दोनों की स्वतंत्रता की कोटी (df) 48, तालिका में 'टी' का मान 1.33 है जो कि 48 df के टी मूल्य 0.05 सार्थकता स्तर (2.01) से कम है। इसलिए आदिवासी बालकों एवं गैर-आदिवासी बालकों के लेखन में होने वाली त्रुटियों में सार्थक अन्तर नहीं है। अतः परिकल्पना को स्वीकार किया जाता है।

इससे यह ज्ञात होता है कि जहां तक आदिवासी बालकों के लेखन का प्रश्न है तो गैर-आदिवासी बालकों के अपेक्षा इनमे सार्थक अन्तर नहीं है। परन्तु त्रुटियाँ का विचार किया जाए तो आदिवासी बालकों ने गैर-आदिवासी बालकों की अपेक्षा 87 लेखन त्रुटियाँ अधिक की है। जिन्हें उपचारात्मक अध्ययन द्वारा कम किया जा सकता है।

### 4.2.9 परिकल्पना क्र.9

**आदिवासी एवं गैर-आदिवासी बालिकाओं के लेखन में होने वाली त्रुटियों में सार्थक अन्तर नहीं हैं।**

आदिवासी एवं गैर-आदिवासी बालिकाओं की लेखन त्रुटियाँ क्र.17 में दिखाई गई है।

तालिका क्रमांक 17

आदिवासी एवं गैर-आदिवासी बालिकाओं की लेखन त्रुटियाँ

| अ.क्र. | वर्गवारी | वाचन | मध्यमान |
|---|---|---|---|
| 1. | आदिवासी बालिका | 546 | 21.84 |
| 2. | गैर-आदिवासी बालिका | 405 | 16.2 |

व्याख्या

तालिका क्र. 17 से स्पष्ट होना है कि आदिवासी बालिकाओं की लेखन की त्रुटियाँ 546 है, जिसका मध्यमान 21.84 है। गैर-आदिवासी बालिकाओं की लेखन की त्रुटियाँ 405 है, जिसका माध्यमान 16.2 है। आदिवासी बालिकाओं का गैर-आदिवासी बालिकाओं की अपेक्षा 141 लेखन त्रुटियाँ अधिक है।

निम्नलिखित तालिका में आदिवासी बालिका एवं गैर-आदिवासी बालिकाओं की लेखन त्रुटियों की तुलना की गई है।

तालिका क्रमांक 18

| अ. क्र. | वर्गवारी | विद्यार्थी (N) | मध्यमान (M) | मानक विचलन (S.D.) | स्वतंत्रता की कोटी (df) | टी का मान (t) | सार्थकता (0.05) |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 1. | आदिवासी बालिका | 25 | 21.84 | 9.12 | 48 | 2.51 | है |
| 2. | गैर-आदिवासी बालक | 25 | 16.2 | 6.56 | | | |

0.05 – 2.01
0.01 – 2.68

व्याख्या

तालिका क्र. 18 से स्पष्ट होता है कि आदिवासी बालिकाओं की संख्या (N) 25 है तथा मध्यमान (M) 21.84 मानक विचलन (S.D.)9.12 है। गैर-आदिवासी बालिकाओं की संख्या (N) 25 है तथा मध्यमान (M) 16.2 मानक विचलन (S.D.) 6.56 है। दोनों की स्तंत्रता की कोटी (df) 48, तालिका में 'टी' का मान (t) 2.51 है जो कि 48 df के टी मूल्य 0.05 सार्थकता स्तर (2.01) से अधिक है। टेबल मूल्य से ज्यादा है इसलिए आदिवासी बालिका एवं गैर-आदिवासी बालिकाओं के लेखन में होने त्रुटियों में सार्थक अन्तर है।

उपर्युक्त विश्लेषण से स्पष्ट है कि आदिवासी बालिका गैर-आदिवासी बालिकाओं की तुलना में लेखन में पिछडी हुई है। आदिवासी बालिकाओं की लेखन के सम्बन्ध में स्थिति काफी चिन्ताजनक है।